भारत सरकार

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

कृषि एवं किसान कल्याण विभाग

राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 326

09 दिसम्बर, 2022 को उत्तरार्थ

तमिलनाडु के डेल्टा जिलों में जलवायु परिवर्तन और सूखे का प्रभाव

326. श्री एस. कल्याणसुन्दरम:

श्री आर. गिरिराजन:

श्री एम. मोहम्मद अब्दुल्ला:

क्या कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क)क्या सरकार ने तमिलनाडु के डेल्टा जिलों के किसानों को प्रभावित करने वाले सूखे, जलवायु परिवर्तन और हाईड्रोकार्बन उत्खनन के प्रभाव के बारे में कोई अध्ययन किया है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(घ) विशेषकर हाईड्रोकार्बन उत्खनन और जलवायु परिवर्तन के संबंध में डेल्टा जिलों के किसानों के मुद्दों के समाधान के लिए सरकार द्वारा क्या कदम उठाए गए हैं, तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री (श्री नरेंद्र सिंह तोमर)

(क) से (घ): राष्ट्रीय जलवायु अनुकूल कृषि नवाचार (एनआईसीआरए) के तहत, 'जलवायु परिवर्तन के कारण हाइड्रोलॉजिकल प्रभावों का आकलन और अनुकूलता बढ़ाने वाली सर्वोत्तम सिंचाई और फसल प्रबंधन कार्यनीतियों का विकास: कावेरी और थामिराबरानी नदी घाटियों' पर पिछले 5 वर्षों में अध्ययन किया गया है। इस परियोजना के तहत, कावेरी डेल्टा क्षेत्र में 10 ब्लॉकों में 300 किसानों के नमूना सर्वेक्षण के साथ क्षेत्र सर्वेक्षण किया गया है। सर्वेक्षण की मुख्य बातें इस प्रकार हैं:

- जलवायु परिवर्तन के प्रति दृष्टिकोण किसानों की विभिन्न श्रेणियों के साथ भिन्न है। छोटे और बड़े किसानों के पास पूरे डेल्टा में जलवायु अनुकूलन प्रक्रिया के लिए अलग-अलग अवसर और चुनौतियाँ हैं।

- दक्षिण पश्चिम और उत्तर पूर्व दोनों मानसून डेल्टा में कृषि प्रणालियों को उचित विन्यास प्रदान करते हैं। जलवायु परिवर्तनशीलता पुराने डेल्टा तटीय जोन और तटीय क्षेत्रों में भी अत्यधिक महसूस की जाती है। बार-बार पड़ने वाले सूखे और बाढ़ इन इलाकों को अत्यधिक प्रभावित करते हैं।
- पिछले दो दशकों से, पानी की कमी और धान की खेती की लागत में वृद्धि के कारण तटीय क्षेत्र में धान की सीधी बुवाई अनिवार्य रूप से की जाती है।
- समुद्र का पानी सिंचाई चैनलों में प्रवेश करता है और तटीय क्षेत्र में पांच से छह किमी आंतरिक क्षेत्रों (विशेष रूप से थालैनायर और सिरकली ब्लॉकों के गांवों में) में प्रवेश करता है। खारे पानी को चैनलों से पंप करके झींगा के फर्मों/तालाबों में डाला जा रहा है जो नहरों के करीब बनाए गए हैं। नतीजतन, आसपास की कृषि भूमि क्षारीय हो गई है।
- चूंकि अधिकांश वर्षों में मेट्टूर बांध से पानी की आपूर्ति अनिश्चित होती है, इसलिए डेल्टा के किसान कृषि के लिए भूजल पर निर्भर होते जा रहे हैं।
- भू-जल के अत्यधिक दोहन से पानी की कमी होती है और भू-जल और मृदा क्षारीय होती है। डेल्टा में क्षारीयता एक आम समस्या है। क्षारीयता से निपटने के लिए, किसान क्रमशः नए डेल्टा जोन और पुराने डेल्टा मध्य क्षेत्र के तटीय क्षेत्र में नारियल और कपास की सिंचाई के लिए खारे पानी का उपयोग करते हैं।
- कावेरी और वेन्नार बेसिन- कोराडाचेरी, कोडावसल, नन्निलम, वलंगाईमन और सिरकली ब्लॉक के किसान धीरे-धीरे धान की वैकल्पिक फसल के रूप में कपास की ओर रुख कर रहे हैं।

पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा दी गयी सूचना के अनुसार सरकार ने इन जिलों के किसानों को प्रभावित करने वाले तमिलनाडु के डेल्टा जिलों में हाइड्रोकार्बन उत्खनन के प्रभाव पर कोई अध्ययन नहीं किया है।

आम लोगों के लाभ के लिए राष्ट्रीय तेल कंपनियों द्वारा विभिन्न कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) पहल की गई हैं, जैसे जल प्रबंधन, रोबोटिक सफाई, सिंचाई नहरों और जल निकायों से गाद निकालना, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पहल, ग्रामीण चिकित्सा शिविर, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के लिए अवसंरचना और उपकरण सहायता, सरकार स्कूलों में स्मार्ट क्लास रूम, प्राकृतिक आपदा के दौरान राहत सेवाएँ, अवसंरचना का विकास, खेल आदि।

*****